Review Of Research
Vol.2, Issue. 11, Aug. 2013
ISSN:-2249-894X
Available online at www.reviewofresearch.net
ORIGINAL ARTICLE

कबीरदास की कृतियों में सामाजिक चेतना

सरोज देवी , बृजेश शर्मा , सुनीता

एम.ए. हिन्दी, यु.जी.सी. नेट, निवासी– गॉवः– शेरपुरा, डाक.– कालोद, तह.व जिला– भिवानी
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र
पी.एच.डी., (समाजशास्त्र),

सारांशः

निर्गुण भक्ति काव्य धारा जिसमें नामदेव प्रमुख कवि हुए है परंतु इस धारा के पर्वतक कबीर दास ही जाने जाते है। यद्यपि उनसे पहले भी निर्गुण भक्ति धारा के कई संत कवि हुए हैं। किन्तु हिन्दी में उनकी रचिनाएँ काफी कम हैं और उत्तर भारत में उनका प्रभाव भी कम हैं। कबीरदास जी की रचनाओं में जो प्रखरता, निर्भीकता और प्रभाव है, वह अन्य पूर्व कवियों की वाणी में नही हैं। यही कारण है कि वे अपने समकालीन एवं परवर्ती पर भी प्रभाव डालने में काफी हद तक समर्थ रहे है। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व इतना प्रभावशाली है कि उसके बिना भक्ति युग का इतिहास लिखना संभव नही है। प्रस्तुत कृति में हम कबीरदास की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालेंगें।

प्रास्ताविक :

सामाजिक चेतना का अर्थ एवं परिभाषाः

चेतना एक बहु–आयामी अवधारणा है जिसका कोई एक निश्चित अर्थ या परिभाषा नही हो सकती। चेतना संवेदनशीलता के एक विशेश गुण या लक्षण को कहते हैं जिसमें तंत्रिकीय क्रियाओं द्वारा एक निश्चित मात्रा में जटिलता प्राप्त कर लेना भी शामिल होता है। जॉन लॉक ने चेतना शब्द का प्रयोग 'व्यक्ति के स्वयं में मस्तिष्क में जो कुछ होता है, उसके बोध के अर्थ में लिया जाता है।' इसके अलावा सामाजिक चेतना व्यक्तियों के बीच अपने आपसी संबंधों के प्रति जागरुकता का भाव सामाजिक चेतना को परिलक्षित करता है, अर्थात जब च्यक्ति समान अनुभवों में अपने को भागीदार समझते हैं, तब यह स्थिति सामाजिक चेतना को प्रकट करती है। किसी सामाजिक समस्या का समाधान करने के उद्धेश्य से उठाए गए कदम व्यक्तियों की सामाजिक चेतना के द्योतक है।

कबीर दास की सामाजिक चेतनाः

कबीरदास अपने समय के सबसे बडे समाज सुधारक के रुप में जाने जाते है। उनका व्यक्तित्व सांस्कृतिक व सामाजिक विविधताएं हुए लिये हुए था क्योंकि वह जन्म से हिन्दु थे और उनका पालन पोशण मुस्लिम वातावरण में हुआ पर वास्तव में वे मानव धर्म के सच्चे पक्षधर थे। उनके विचारों का आज भी उतना ही महत्व है जितना उनके अपने समय में था।

काव्य कवि की वह देन होती है जो वह अपने से बाहर और भीतर चारों ओर के वातावरण से है जिसमें जड और चेतन सभी आ जाते है तथा 'भीतर' उसके चेतन से सम्बन्धित है। कवि का कार्य तो उस भवंरे की तरह है जो फूल–फूल सं पराग इकट्ठा कर अपने अंदर के रस में मिला मधु रुप में परिवर्तित कर देता है। कबीर ने भी जो अपनी वाणी प्रस्तुत की, वह पूर्ण रुप से शुद्ध कविता नहीं है बल्कि अपने युग के प्रति दृष्टि है। उन्होंने जो कुछ भी कहा–कुछ मस्ती कहा– कुछ क्षुब्ध होकर कहा और कुछ सहानुभूति और प्रेमपूर्वक कहा।

कबीर के युग में भारत राजनैतिक और धर्म की दृष्टि से ह्रासोन्मुखी था। भारतीय जीवन के क्षितिज पर भयापक उत्पात मंडराने लगे थे। मुसलमान लूटमार, राज्य स्थापना और धर्म के प्रचार के लिए भारत पर छा चुके थे। कबीर ने युगीन परिस्थितियों में समझा और सहज युग चेमा का कार्य निभाया।

(i)हिंदू–मुस्लिम प्रेम– कबीरदास जी ने धर्म निरपेक्षता के नए आयाम समाज के समक्ष प्रस्तुत किये तथा अपनी वाणी में हिंदू–मुस्लिम प्रेम की एक सुदृढ आधारशिला रखी। उन्होनें धर्म की परिस्थितियों को भ्रम मात्र कह की उसे उदार रुप में ग्रहण करने का आग्रह किया था। उन्होनें प्रेम का संबंध ईश्वर से जोड कर मनुष्य मात्र को इस में मिला दिया था तथा ''कहै कबीर एक राम जपहु रै भाई, हिुदू तुरक में भेद न कोई'' कह कर दोंनों के अभेद को स्पष्ट किया। उस समय हिंदू–मुस्लमानों के बीच जो संघर्ष था, कबीर ने सहिष्णुता लाने का अनुठा कार्य किया।

(ii)वर्णाश्रम व्यवस्था का विरोध– कबीरदास जी हिन्दू धर्म ही वर्ण व्यवस्था जो कि बहुत ही विभेदपूर्ण थी का खंडन किया। उनके युग में अनेक धार्मिक सम्प्रदाय अपनी विषम परिस्थितियों में पाररूपरिक विरोध को लेकर प्रकट हो चुके थे। वे एक दूसरे को नीचा दिखाने में लीन थे। कबीर ने वर्णाश्रम के पीछे लोगों की मूर्खता और अज्ञानता को देखा। उन्होंने सभी उच्च वर्गो को दुत्कारा और समाज के तथाकथित निम्न वर्ग को उच्चता देने कर यत्न किया।

(iii)आडंबरों का विरोध – कबीर ने विभिन्न धर्मों के लोगो द्वारा किए जाने वाले आडंबरो का डटकर विरोध किया। इन्होनें साधु–योगियों के

Title: *कबीरदास की कृतियों में सामाजिक चेतना*
Source:Review of Research [2249-894X] *सरोज देवी , बृजेश शर्मा , सुनीता* **yr:2013 vol:2 iss:11**

आचार को भी बुरा माना। इनके अनुसार केवल वेश–भूषा से परमात्मा की प्राप्ति नही होती।
फाड़ि पुटौला धजि करौ, कम लडी पहराउं।
जेही जेही भेशां हरि मिलै, सोइ सोइ भेश धराउं।
जो मुद्रा लगा कर लोगों को देखते हैं, वे अवधूत नहीं हैं बल्कि आंडबर रचाने वाले धोखेबाज़ है–
अवधि जोगी जगथैं न्यारा।
मुद्रा निरति सुरति करि सींगी, नादर वंडै धारा।।
मूर्ति पूजा, तीर्थ–व्रत आदि का इन्होंने खुलकर विरोध किया है।
पाहन पूजै हरि मिलै, तो मै पूजौं पहाड।
ताते चाकी भली, पीसी खाए संसार।।

(iv) नारी का स्वरुप – कबीर ने नारी जीवन के दो प्रकार के चित्र प्रस्तुत किये हैं– नारी निंदा और नारी प्रशंसा। वे मानते है कि नारी प्रभु को पाने के लिए साधना पथ की सबसे बडी बाधा है, वह दुर्गम घाटी है। उसका काम–मूलक रुप न केवल साधना में बाधक है बल्कि सामाजिक मर्यादाओं में भी अविघातक है–

नारी का झाईं परत अंधा होत भुजंग।
कबिरा तिन की का गति, नित नारी के संग।।
इन्होनें पवित्रता नारी की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। वह 'संत' और 'सूरमा' की कोटी में हैं–
संत सती और सूरमा, इन पटतर कोउ नांहि।
अगम पंथ को पग धरै, डिगै तो कंहा समाहिं।।

(v)रीति–रिवाजों और प्रथाओं का चित्रण– कबीर ने सुधारवादी होने के कारण तरह–तरह के सामाजिक रिती–रिवाजों और प्रथाओं का चित्रण भी किया है व इन सब पर आध्यात्मिक आवरण डाल दिया है। इन्होनें कृषि, व्यापार, नौकरी, छोटे–बड़े कामों को रुपक के रुप में प्रस्तुत किया है। रुपया उधार लेने, ब्याज बढ़ने आदि को भी रुपकों में प्रस्तुत किया है–

मन रे कागद कीर पराया।
कहा भयौ ब्यौपार तुम्हारै, कलकतर बढ़ै सवाया।

(vi)जाति–पाती का विरोध– कबीर ने भक्ति के मार्ग पर चलते हुए जातिगत भेदभाव का विरोध किया है। वह जात–पात, उंच–नीच आदि को स्वीकार नही करते। उनका मानना है–

जाति–पाति पूछे नहीं कोई।
हरि को भजे सो हरि का होई।।

(vii)अवतारवाद और बहुदेववाद का विरोध– कबीरदास ने निर्गुण भावना पर अपनी भक्ति भावना को आधारित कर अवतारवाद और अनेक देवी–देवताओं के प्रति विश्वास का विरोध किया। कहीं–कहीं तो उन का विरोध अति उग्र स्वर में भी है। वह ईश्वर के अद्वैतवादी रुप को ही मानते है और अवतार–भावना की आलोचना करते हैं। राम के अवतारी रुप के विशय में वह कहते हैं–

राम को पिता जसरथ कहिए, जसरथ कौन जाया।
जसरथ पिता राम कौ दादा कह्यौ कंहा ते आया।।

निष्कर्ष:

कबीरदास अनपढ थे परंतु अशिक्षत होते हुए भी उन्होंने समाज में व्याप्त अंधकार को अपनी वाणी रुपी रोशनी की मशाल से समाप्त करने का प्रयास किया उन्होनें जनसाधारण की भाषा में सामाजिक चेतना उत्पन्न करने का प्रयास किया जिसमें आडमबंरवाद, मूर्तिपूजा, वर्ण–व्यवस्था, जाति–पाती इत्यादि का पुरजोर विरोध किया। उन्होनें अपनी रचनाओं के जरिए धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक समरसता, कर्म प्रधानता तथा मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया। वे परिस्थितियों से समझौता करने के लिए सामाजिक विषमताओं में क्रांति चाहते थे। वे दलित के प्रति सहृदय और उदार थे और विषमता के प्रति उग्र आक्रोश रखते थे। अतः हम कह सकते है कि उनकी वाणी ने उन्हें एक युग चेता कवि के रुप में स्थापित किया तथा उन्होनें समाज का चित्रण काव्य सीमा में रह कर ही किया।

टिप्पणियॉ:

1.कबीर– व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सिद्धांत भाग–1 और 2, डॉ. सरनाम सिंह शर्मा, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली, 2011
2.कबीर एक पुनर्मूल्याकंन, डॉ. बलदेव वंशी, आधार प्रकाशन, पंचकुला, हरियाणा, 2011
3.रमैनी, डॉ. जयदेव सिंह एवं डॉ. वासुदेव सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1974
4.कबीर : कल्पना–शक्ति और काव्यसौन्दर्य, ब्रह्मदत्त शर्मा, भारतेन्दू भवन, शिमला, 1969
5.कबीर साहित्य और सिद्धांत, यज्ञदत शर्मा, अक्षरम्, सोनीपत, 1990
6.संत कबीर, डॉ रामकुमार वर्मा, साहित्य भवन प्रा. लिमिटड , इलाहाबाद, 1999
7.कबीर ग्रन्थावली, डॉ. पुष्पपाल सिंह, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004
8.नई सदी में कबीर, डॉ. एम. फिरोज खान, विनय प्रकाशन, अहमदाबाद, 2011
9.कबीर अनुशीलन, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, कलकता, 2000
10.Madhya Yugem Kavya : edited by Brij Narayana Singh, Published by national Publish, Delhi.
11.Traditions of Non-Caste Hinduism: The Kabir Panth , Contributions to Indian Sociology July 1987 vol.

DSpace™

21 , Sage.
12.Kabir Granthavali, Shyam Sundar Das,: Lokbharti Prakashan, 2010